IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'मुक्तिबोध' की कविता 'अंधेरे में' का विविध पक्ष'

उर्मिला भगत,

पी.एच.डी शोधार्थी, हिन्दी विभाग,

कॉटन विश्वविद्यालय गुवाहाटी, असम

2. प्रस्तावना – कविवर 'गजानन माधव मुक्तिबोध' (1917-1964) की गणना प्रगतिवादी कवियों में की जाती है। उन्हें भले ही उम्र कम मिली हो, लेकिन अपनी रचनाओं के द्वारा युग परिवर्तन का काम किया। 'मुक्तिबोध' पहली बार व्यवस्थित ढंग से अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के माध्यम से सामने आए। यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि मुक्तिबोध के जीवन-काल में उनकी एक ही रचना 'एक साहित्यिक की डायरी' प्रकाशित हुई। 'मुक्तिबोध' को जो प्यार और सम्मान हिंदी जगत से मिलना चाहिए था वह उन्हें जीवित रहते न मिली। मृत्यु के बाद वे एक विलक्षण रचनाकार साबित हुए। जिसका प्रभाव कविता, कहानी ,विचार और आलोचना में स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। 'मुक्तिबोध' का जीवन और काव्य अभिन्न है। उनका संपूर्ण साहित्य संवेदनशील रचनाकार की अभिव्यक्ति है। जिसने अपने युग की यथार्थ को ब्राह्य एवं आंतरिक दोनों स्तरों पर गहराई से महसूस किया। स्वाधीनता के बाद देश जिस भ्रष्ट, शोषक और अन्यायपूर्ण व्यवस्था से पीड़ीत था। 'मुक्तिबोध' ने 'अंधेरे में' नामक कविता में व्यवस्था की वास्तविक चेहरा सामने लाया और साथ ही उसमें व्यक्ति की अपनी भूमिका पर प्रश्न-चिन्ह् लगाते हैं।

2. अध्ययन का महत्व- सन् 1964 में मुक्तिबोध का काव्य 'अंधेरे में' प्रकाशन जगत में आते ही हिन्दी – साहित्य जगत में हलचल सी मच गयी । आज से लगभग 53 वर्ष पहले का हिन्दी समाज इन अभिनव विषय, नूतन तेवर, तथा नवीन शिल्प गत चमत्कार वाली कविता से अवाक और चमत्कृत हुआ था। तो आज का हिन्दी समाज भी इस कविता से बेहद प्रभावित है। इस कालजयी रचना का कथ्य एवं संदेश तब भी प्रासंगिक था और आज भी है बल्कि आज इसकी प्रासंगिकता अधिक है। इस दृष्टि से मुक्तिबोध की सर्वश्रेष्ठ रचना अंधेरे में कविता का अध्ययन और विश्लेषण अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हो जाता है।

3. अध्ययन का शीर्षक- प्रस्तुत शोध- पत्र का शीर्षक है- 'मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' का विविध पक्ष'।

4. अध्ययन का उद्देश्य- आलोच्य विषय पर शोध परक अध्ययन का उद्देश्य है- कविवर मुक्तिबोध की सर्वश्रेष्ठ, जटिल, लोकप्रिय एवं प्रतिनिधि मूलक कविता 'अंधेरे में' की विविध पक्षों पर सहज रूप में

व्याख्यायित- विश्लेषित करना ताकि मुक्तिबोध की काव्य प्रतिभा को सही रूप में समझाते हुए उनके कालबोध, जीवनाभूति, समाज दर्शन, के विशोषताओं को रेखांकित किया जा सके।

5. अध्ययन का सीमांकन- मुक्तिबोध का काव्य संग्रह 'चाँद का मुंह टेढ़ है' में 28 कविताएं संकलित है। प्रस्तुत शोध लेख में उनकी सर्वाधिक चर्चित, श्रेष्ठ और लम्बी कविता 'अंधेरे में' को ही अध्ययन लिए मुख्य रूप से लिया गया है। जो लगभग 40 पृष्ठ और आठ खंडों में है।

6. अध्ययन में व्यवहृत पद्धति एवं उपाय- प्रस्तुत शोध-पत्र में आधार भूत सामग्री के रूप में 'चाँद के मुंह टेढ़ा है' में संकलित 'अंधेरे में' कविता और इससे तथा मुक्तिबोध संबंधित समीक्षात्मक ग्रंथों, इन्टरनेट, पत्र-पत्रिकाएं, की सहायता ली गयी है। तथा इसमें अपनायी गयी पद्धति व्याख्या-विश्लेषणात्मक और गौणतः तुलनात्मक है। साथ ही एम. एल. ए शोध पद्धति को यहाँ आधार रूप में अपनाया गया है।

7. विश्लेषण एवं निर्वचन-

सन् 1965 के 'नया ज्ञानोदय' में 'श्रीकांत वर्मा' का एक लेख छपा था जिसमें उन्होंने लिखा था :

> "अप्रिय सत्य की रक्षा करने का काव्य रचने वाले कवि मुक्तिबोध को अपने जीवन में कोई लोकप्रियता नहीं मिली और आगे भी, कभी भी, शायद नहीं मिलेगी।"

आगे चल कर उनकी आशंका गलत सिद्ध हुई 'मुक्तिबोध' 'निराला' के बाद हिन्दी के सबसे बड़े और चर्चित रचनाकार स्थापित हुए। सच्चाई तो यह है कि मुक्तिबोध सफलता के लिए दोयम दर्जे के तौर-तरीकों से पूरी तरह दूर रहे। कभी कोई छल नहीं रचा । चालाकी और छल-छदेम से जिंदगी की ऊंची शिखर तक पहुँचने का कोई लालसा भी उनमें न थी। तभी तो वह दो टूक शब्दों में कहते हैं कि-

"असफलता का धूल ओढ़े हूँ
इस लिए कि सफलता
छल-छद्म के चक्रदार जीनों पर मिलती है
किन्तु मैं जीवन की-
सीधी सादी पटरी-पटरी दौड़ा हूँ" (जैन,10.8:2015

'अंधेरे में' कविता के माध्यम से गंभीर संवेदनाओं तथा भावानुभूतियों को अभिव्यक्ति मिली है। प्रस्तुत कविता में उन्होंने शासक और बौद्धिक वर्ग के बीच के गठबंधन का पर्दाफाश किया है। शासक वर्ग आम जनता का शोषण करता है और जनता क्रांतिकारी बनती जाती है। यह कविता उस समय लिखी गयी थी जब जनता में स्वाधीन भारत के शासकों से बड़ी-बड़ी उम्मिद पाल रखी थी लेकिन जलद ही मोहभंग हो गया। साधारण जन के सारे सपने टूट गये थे। उस वक्त मुक्तिबोध ने 'अंधेरे में' नामक कविता लिखी और शासक वर्ग के वास्तविक चेहरे पर प्रकाश डाला। सत्ताधरी और बौद्धिक वर्ग के बीच का गठजोड़, जनता पर उसका शोषण, परम्परा का ध्वंस, व्यक्ति स्वतंत्रता की अवहेलना, अभिव्यक्ति की समस्या आदि पक्षों को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है।

'अँधेरे में' कविता से संबंधित कुछ बातों को जान लेना आवश्यक है जैसे इसका रचना वर्ष और प्रेरक तत्व- 'अँधेरे में' कविता का रचना काल को लेकर विद्वानों में मतभेद है 'मुक्तिबोध रचनावली' में 'नेमिचंद्र जैन' ने इस कविता का रचना वर्ष 1957 से 1962 तक संभावित माना है। 'चाँद का मुंह टेढ़ा है' कि भूमिका में 'शमशेर बहादुर सिंह' ने लिखा है :

"इस कविता की रचना मुक्तिबोध ने राजनांदगाव में की थी। राजनांदगाव वे जुलाई 1958 में पहुंचे थे और 1961 में उन्होंने उन्हें वहाँ अपनी तीन लम्बी और लाजबाब कविताएं सुनाई थी, उनमें एक कविता 'अंधेरे में' भी थी।,,(मुक्तिबोध 1978 :18) ।

इसी भूमिका में उन्होंने यह भी लिखा है कि एंप्रेस मिल के मजदूरों पर जब गोली चली थी तो मुक्तिबोध रिपोर्टर के हिसाब से वही थे। नागपुर रेडियो में मुक्तिबोध के सहकर्मी अनिल कुमार ने भी 'लक्षित मुक्तिबोध' में कहा है :

"अंधेरे में कविता का पृष्ठ भूमि एंप्रेस मिल की गोलीकांड से संबंधित है।" (नवल 1992:121)

विष्णुचंद्र शर्मा ने भी 'मुक्तिबोध की आत्म कथा' में भी इसी गोलीकांड के अनुभवों की चर्चा की है। उक्त गोलीकांड की अनुभवों का उपयोग उन्होंने कुछ दिनों बाद 'अंधेरे में' कविता में किया होगा। लेकिन हरिशंकर परसाई ने अपने दो संस्मरणों में 'अंधेरे में' की रचना का संबंध एक दूसरी घटना से बताया है। वह घटना है- मुक्तिबोध द्वारा रचित '*भारत : इतिहास और संस्कृति*' का मध्य प्रदेश सरकार के द्वारा प्रतिबंधित किया जाना। यह घटना सन् 1962 ई. को घटित हुई थी। मुक्तिबोध अपनी पुस्तक के जब्ती करण को वह लेखकों के विचार स्वतंत्रता और लेखन स्वतंत्रता के लिए खौफनाक मानते थे। इस घटना से मुक्तिबोध को बहुत गहरा सदमा पहुंचा था। वह कई दिनों तक खोए- खोए से रहे स्पष्टतः इस घटना ने उन्हें बहुत आंदोलित किया था और इस घटना ने उन्हें 'अंधेरे में' कविता लिखने के लिए सबसे बड़ा प्रेरक तत्व सिद्ध हुई हो। अतः 'अंधेरे में' कविता का प्रेरक तत्व और रचना का प्रतिबंधित पुस्तक और उसके समय से है।

'अंधेरे में' कविता का आरम्भ व्यक्ति (नायक) से होती है लेकिन व्यक्ति के आत्मसंघर्ष एक बहुत सुदृढ़ सामाजिक संदर्भ है मार्शल लॉ । 'अंधेरे में' कविता की मुख्य वस्तु देश में कायम फास्टि हुकूमत है और प्रगतिशील मध्य वर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष। डॉ. रामविलास शर्मा ने 'अंधेरे में' को विभाजित व्यक्तित्व की कविता कहा जाता है जब कि नामवर सिंह ने अस्मिता की खोज की कविता माना है। इस तरह विद्वानों ने कविता में जो गौण थी उस मुख्य बना दिया और जो मुख्य थी उसे गौण बना दिया। स्वयं कवि की दृष्टि में इस कविता की मुख्य वस्तु क्या है ? इसका पता अग्नेश्का सोनी को लिखें गये उनके पत्र से मालूम होता है :

"उसमें एक आशंका है, अंधेरी आशंका का वातावरण है – कहीं हमारे भारत में ऐसा – वैसा न हो।" (नवल 1992..133)

विद्वानों में यह भ्रम कविता के शीर्षक के कारण हुआ क्यों कि इससे पहले इसका नाम 'आशंका के द्वीप : अंधेरे में' था। अगर कवि ने इसके शीर्षक में परिवर्तन न करवाया होता तो यह भ्रम पैदा न होता।

'अँधेरा' मुक्तिबोध के लिए टेकनीक नहीं थी, न ही वह उनके गुप्त पीड़ाओं, चिन्ताओं से उपजा था । वह यथार्थ था, उनके समय और समाज का अंधकार । जिसे निराला ने भी देखा था :

"उगलता गगन घन अंधकार
खो रही दिशा का ज्ञान
स्तब्ध है पवन चार।" (निराला 1992 43)

उस अंधेरों को मुक्तिबोध ने भी देखा :

"चिंता हो गई कविता पढ़ते ही
उसमें से अँधेरे का भभकारा उमड़ा।" (जैन 1978 :25)

चिंता इस लिए थी कि आजादी के बाद अंधेरे को खत्म होना था लेकिन आजादी के बाद तो यह बढ़ता ही जा रहा है। 'काव्य एक सांस्कृतिक प्रक्रिया' नामक निबंध में मुक्तिबोध ने अपने युग की परिस्थितियों और उसमें कवि की स्थिति का वर्ण करते हुए लिखते हैं :

"आज का कवि एक साधारण असामान्य युग में रह रहा है वह एक ऐसे युग में है, जहाँ मानव सभ्यता संबंधित प्रश्न महत्वपूर्ण हो उठे हैं। समाज भयानक रूप से विषमता – ग्रस्त हो गया है । चारों ओर नैतिक हरस के दृश्य दिखाई दे रहे हैं। नोच- खसोट, अवसाद, भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है। कल के मसीहा आज उत्पीड़क हो उठे हैं। .....मानव संबंध टूट- फूट गये हैं। समाज में शोषकों और उत्पीड़कों और उनके साथियों का जोर बढ़ रहा है।" (मुक्तिबोध 1978: 14-15)

मुक्तिबोध ने जुलूस के माध्यम से उन लोगों पर से पर्दा उठाया है जो छिपे तौर पर सत्ताधारियों का समर्थन ही नहीं करते, उसकी रक्षा में भी हाजिर रहते हैं। कवि को आश्चर्य होता है कि उस जुलूस में बड़े-बड़े पत्रकार भी शामिल हैं । जो पूंजीवादी व्यवस्था का समर्थन पूरी निष्ठा और शक्ति के साथ करते हैं। और पूंजीवादी द्वारा लायी गयी व्यवस्था फासिज्म का यशोगान करते हैं। जिसकी अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में हुआ है :

"कर्नल, ब्रिगेडियर
चेहरे वे मेरे जाने-बूझे से लगते
उनके चित्र समाचार पत्रों में छपे थे,
उनके लेख देखे थे
यहाँ कत कि कविताएँ पढ़ी थी
भाई वाह
उनमें कई प्रकांड आलोचक विचारक जगमगाते कवि-गण
मन्त्री भी उद्दोगपत्ति और विद्वान
यहाँ तक कि शहर का हत्यारा कुख्यात
डोमा जी उस्ताद
****
भीतर की राक्षसी स्वार्थ अब
साफ़ उभर आया है
छिपे हुए उद्देश्य" (मुक्तिबोध 1978:239)

अर्थात् पूजी वाद के पक्षधर आलोचक, विचारक, कविगण, मंत्री, उद्योगपति, विद्वान, और अपराध कर्मी ये सभी फासिज्म की वैचारिक, राजनीतिक और आर्थिक आधार भूमि है। पूंजीवादी के समर्थक लोग दिन में विभिन्न दफ्तरों –कार्यालयों , केन्द्रों और घरों में मिलकर षड्यंत्र करते हैं । और आम जनता का शोषण, अत्याचार करते हैं।

कवि समाज व्यवस्था के नग्न रूप का चित्रण करते हुए कहते हैं कि अगर कोई उन्हें वास्तविक रूप में देख ले तो उसकी हत्या कर देते हैं । जिसकी अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में हुआ है-

" मारो गोली दागो स्साले को एकदम

****

आधी रात अंधेरे में उसने

देख लिया हम को।" (मुक्तिबोध 1978:239)

फांसीवादी समाज में व्यक्ति की स्थिति का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि किसी जन क्रांति के दमन हेतु लगाये गये मार्शल लॉ को देख कर वह भयभित हो गलियों में दौड़ते समय दम तोड़ता सा प्रतीत हो रहा है। आज भी साधारण जनता अपने ही देश की व्यवस्था के कारण दम तोड़ सा प्रतीत हो रहा है। आज के मनुष्य की बदहवासी और निरूपायता को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। *मार्क्स के अनुसार,*

"क्रांति राष्ट्र करता है पार्टी नहीं"(18)

'अंधेरे में' कविता इन दोनों कट्टर राहों से अलग जनता के जनराष्ट्रवाद का मार्ग सुझाती है। इसे कविता में 'तिलक' और 'गांधी' जी के रूपकों के माध्यम से कवि ने समझाया है। तिलक की प्रतिमा का हिलना, चिंता से मस्तिष्क का फटना तथा खून की धारा बहन राष्ट्रीय मुक्ति के क्रांतिकारी चेतना का प्रतीक है।–

"भव्य ललाट की नासिका में से

बह रहा खून न जाने कबसे

लाल-लाल गरमीला रक्त टकता

मस्तक कोष ही फूट पड़े सहसा।" (मुक्तिबोध 1976:)

तत्पश्चात गांधी जी बोरा ओढ़े हुए दिखायी देते हैं। गांधी जी के माध्यम से कवि ने जनता की शक्ति का चित्रण किया है। गांधी काव्य नायक से कहते हैं कि शक्ति नेता में नहीं, जनता में होती है। गांधी जी के कंधों पर सवार बच्चा यहाँ स्वतंत्रता का शिशु है जिसकी सुरक्षा का दायित्व गांधी जी काव्य नायक को सौंप कर गायब हो जाते हैं :

"जनता के गुणों से ही सम्भव

भावी का भद्रव....

****

मुसकरा उस दुदुति पुरुष ने कहा तब

मेरे पास चुपचाप सोया हुआ यह था

सँभालना इसको, सुरक्षित रखना।" (मुक्तिबोध 1978:252)

वह आजाद शिशु जो पहले सूर्यमुखी के प्रकाश कण से भरे पुष्प गुच्छा में बदल जाता है अंततः काव्य नायक के कंधों पर भारी जायफल में तबदील हो जाता है। आजादी के बाद देश के सामने प्रश्न शेष थे- किसकी आजादी ? कैसी आजादी? किसका राष्ट्र? कैसा राष्ट्र ?क्या यह वही आजादी थी जिसका स्वप्न भारतीय जनता ने देखी थी। इस कविता में आजादी के बाद मोह भंग का चित्रण कवि ने बड़े ही कलात्मक ढंग से किया है। आज जनता और मध्यवर्ग के असंतोष, आक्रोश और बेचैनी मौजूद

है। जिसका कारण अनेक राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय घटनाएं थी। उन सभी घटनाओं का यर्थाथ बिम्ब 'अंधेरे में' देखा जा सकता है :

"जम गए, जमा हुए, फँस गए
अपने ही कीचड़ में धंस गए
विवेक बघार डाला स्वार्थों के तेल में
आदर्श खा गये।" (मुक्तिबोध 1978:243)

इस कविता में मध्यवर्गीय काव्य नायक के सम्मुख पागल छंद युक्त गीत यूँ ही नहीं गाता है इस गीत के माध्यम से कवि ने उस स्थिति को विश्लेषित किया है कि कैसे स्वार्थ के टेरियार कुत्ते पाल हमने भावना के कर्तव्य त्याग दिये। किस तरह हमने अपनी स्वार्थ को अपने देश से अधिक महत्व दिया। यह गीत काव्य नायक को बुरी तरह विचलित कर देता है और इन सारे अवमूल्यन में वह अपनी भूमिका तलाशने लगता है। यहाँ असंगत अस्तित्व के खोज में जन विमुख कलाकार और कोई नहीं काव्य नायक का मध्यवर्गीय बौद्धिक अवचेतना है । कलाकार का दायित्व केवल मनोरंजन करना नहीं होता है बल्कि जनसंघर्स में हिस्सेदारी तथा व्यवस्था –परिवर्तन के व्यापक स्वप्न के साथ जुड़ाव है। किन्तु आज का मध्यवर्गीय कलाकार बाजार संस्कृति, सत्ता संस्कृति, और जन संस्कृति, मार्शल लॉ और जन संघर्ष, क्रांति और भ्रांति, आधुनिकता और बर्बरता , मध्यकालीनता और उत्तर आधुनिकता के विभ्रमकारी भँवर में इस कदर फंस गया है कि उसका असंग व्यक्तित्व भावी विध्वंस की ओर उन्मुख है। जहाँ पहले कला को कला के लिए या जीवन के लिए प्रश्न उठाया जाता था, लेकिन आज कला जीवन के लिए नहीं , जीवन यापन और आत्म विज्ञापन के लिए बन गयी है। इस दृष्टि से भी मुक्तिबोध और उनका काव्य अंधेरे में की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गयी है :

"अब तक क्या किया
जीवन क्या जिया
ज्यादा लिया और दिया बहुत– बहुत कम
मर गया देश, अरे जीवित रह गये तुम ....." (मुक्तिबोध 1978:243)

ऐसे अनेक सवाल जो मुक्तिबोध के समय में थे और वह आज भी है। आज यथार्थ की नज़र तो दूर , उसकी समझ भी जैसे गुनाह है, हमारे रहनुमाओं की नजरों में। आज भी वह षड्यंत्र जारी है। इससे भला कौन इनकार कर सकता है ज्यादा लेने और बहुत-बहुत कम देने की बात छोड़ दीजिए, आज सिर्फ लेने और कुछ भी न देने की मिसाल आम बात है। जिसकी सफल अभिव्यक्ति मुक्तिबोध ने 'अंधेरे में' काव्य में किया है।

इस कविता में आगे चलकर एक मध्यवर्गीय कलाकार की असंगत मृत्यु का वर्णन करते हुए लिखते हैं जब शिशु फूल से रायफल में बदल जाता है, तो ठीक उसी समय एक एकांतप्रिय कलाकार की हत्या हो जाती है। काव्य नायक टार्च के प्रकाश में खून भरे बाल में उलझा सर, भौंहों के बीच में गोली का निशान, होंठों पर कत्थई धारा, फूटा चश्मा दिखाई पड़ता है जिसकी मार्मिक अभिव्यक्ति कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से किया है :

"सचाई थी सिर्फ एक अहसास

वह कलाकार था

गलियों में अंधेरे का हृदय मेंभार था

परकार्य क्षमता सेवंचित व्यक्तित्व

चलता था अपना असंग अस्तित्व

****

किन्तु न जाने किस झोंक में क्या कर गुजरा कि

संदेहास्पद समझा गया और

मारा गया वह वधिकों के हाथों ।" (मुक्तिबोध 1978:255)

मुक्तिबोध का काव्य नायक की समस्या केवल बाह्य औपनिवेशिक आधुनिक नहीं है बल्कि आंतरिक गढ़वाद और मठवाद भी है। सच्ची जनमुक्ति और जनक्रांति के लिए वह अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाना चाहता है :

"अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे

उठाने ही होंगे।

तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब

पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार

तब कहीं देखने मिलेंगे बाहें

जिसमें कि प्रतिपल कॉपता रहा

अरूण कमल एक।" (मुक्तिबोध 1978:261)

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने अभिव्यक्ति की आजादी की मांग की है। साथ ही पुरानी इमारतों , मठों की जर्जरता हमारे सामने एक वैकल्पिक सभ्यता निर्माण का चित्र उपस्थित करती है। मुक्तिबोध जब 'अंधेरे में' कविता लिख रहे थे उन दिनों वे गंभीर तनाव से गुजर रहे थे। उनके अस्तित्व को बचाने वाली स्कूली पाठ्यक्रम की किताब 'भारत : इतिहास और संस्कृति' पर प्रतिबंध तत्कालिन राज्य सरकार ने लगा दिया था। हरिशंकर परसाई ने 'मुक्तिबोध : एक संस्मरण' में लिखते हैं :

> *"उन दिनों उनकी पुस्तक 'भारत: इतिहास और संस्कृति' पर प्रतिबंध लग चुका था । वह पुस्तक कोर्स में लग चुकी थी। उसके खिलाफ आंदोलन करने वाले मुख्यतः दूसरे प्रकाशक थे। आंदोलन में जन संघ प्रमुख था इसके साथ ही गैर सांप्रदायिक पत्रों के भी बिके हुए संपादक थे। जनसंघ उनके पीछे पड़ गया था राजनांदगांव में उसके स्वयंसेवक उन्हें बहुत परेशान करते थे। उस वक्त विद्वान लेकिन अधिकारहीन राज्यपाल था और भ्रष्ट तथा मूर्ख मुख्यमंत्री..... इस पूरे कांड को व्यापक राजनीति संदर्भ में देखकर वे बहुत त्रस्त थे। कहते थे- यह नंगा फासिज्म है लेखक को लोग घेरें, शारीरिक क्षति की धमकी दी । इधर सरकार सुनने तक को तैयार नहीं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जा रही है। (नवल 1992:123)*

मुक्तिबोध इसी संदर्भ में अभिव्यक्ति की निजता और स्वतंत्रता का प्रश्न उठाते हैं। और एक अपराजित संकल्प के रूप मे इस किलेबंदी को तोड़ती उस पर प्रहार करती कविता 'अंधेरे में' रचते हैं।

8. उपलब्धियाँ-

* मुक्तिबोध निराला के बाद हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ मानवतावादी कवि है।

* बीतने के साथ चीजे अतीत बन जाती हैं लेकिन अंधेरे में ऐसी कविता है जो अतीत बनने से इनकार करती हुई हमारे भविष्य की ओर इशारा करती है।

* मुक्तिबोध को हम फैंटेसी का सम्राट कह सकते है उनके काव्य अंधेरे मैं भयानक से भयानक, विद्रुप से विद्रूप और कोमल से कोमल फैंटेसी को हम महसूस कर सकते हैं।

* 'अंधरे में' कविता देश के जन इतिहास का, स्वतंत्रता से पहले और बाद की स्थिति का प्रमाण पत्र है।

*यह कविता रोमानी होते हुए भी अत्यधिक यथार्थवादी और आधुनिक है।

* मुक्तिबोध भविष्य के द्रष्टा थे । अंधेरे में कविता को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि कवि अपने युग की नहीं बल्कि हमारे युग की नग्न यथार्थ का वर्णन कर रहें हैं।

* अंधेरे में केवल मुक्तिबोध के खोई हुई परम अभिव्यक्ति की खोज आख्यान नहीं बल्कि पूरे समाज की खोई हुई परम अभिव्यक्ति है।

* यहां कवि ने औपनिवेशिक आधुनिकता के दमनकारी, तानाशाह, एकांगी, यथार्थवाद, तर्कप्रधान, मशीनी एवं तकनीकी सत्य को चुनौती देने के लिए फैंटेसी प्रविधि का प्रयोग किया है।

9. निष्कर्ष – 'अंधेरे में' कविता के माध्यम से 'मुक्तिबोध' ने स्वतंत्रता के बाद की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में जो परिवर्तन आया उसकी व्यथा गाथा को व्यक्त करते हुए नज़र आते हैं। मुक्तिबोध ने सत्ता वर्ग और बुद्धिजीवियों के दोहरी मानसिकता का पर्दा फांस किया है। सत्ताधारियों ने अपने हित के लिए समाज को बाट दिया है। ताकि कोई बगावत न करें। मुक्तिबोध अंधेरे में के माध्यम से केवल अपने युग को ही चित्रित नहीं करते बल्कि वे भविष्य की भयानक स्थितियों के तरफ इशारा भी करते हैं। आज सत्ताधरी के साथ मिलकर पूंजीपति, बड़े-बड़े आलोचक, कवि और संपादक साधारण जन का शोषण कर रहें हैं। आज कॉरपोरेटर पूंजी द्वारा हमारे देश की प्राकृतिक संपदा, जंगल, जमीन की लूट जारी है । आज साहित्यकार अपने वास्तविक कर्तव्य से विमुख हो गया है। आज साहित्य जीवन यापन और आत्म विज्ञापन का साधन बनते जा रहा है। साहित्यकार की इस प्रवृति पर मुक्तिबोध व्यंग करते हुए उसे सही मार्ग दिखाते हैं। इसके साथ ही कवि ने मध्यवर्गीय जनता की उदासीनता, लाचारी और तमाशबीन सोच का विरोध करते हैं। कवि पागल के माध्यम से आत्मालोचन करते हुए नायक को जाग्रत करता है मुक्तिबोध अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाना चाहते हैं क्योंकि यह समय की मांग हैं । मुक्तिबोध के समय में भले ही यह कविता फैंटेसी रही हो लेकिन आज यह हमारे समाज, सत्ता व्यवस्था, जनता की वास्तविक तस्वीर है । इस कविता की शांश्वतता का सबसे बड़ी कारण है कि अंधेरे में कविता अपने समय और समाज का भयंकर सच बन चुकी है जो लगातार इतिहास और वर्तमान के फिर इतिहास बनने का अतिक्रमण कर भविष्य का बयान करती चल रही है। यह निराशा की नहीं बल्कि संघर्ष की कविता है, जो व्यक्ति से आरम्भ होकर समष्टि में समाहित हो जाती है। अंधेरे में के

माध्यम से कवि ने मानव अवचेतना पर हो रहे दमन, अधिग्रहण और अतिक्रमण का विरोध किया है। मुक्तिबोध द्वारा रचित काव्य 'अंधेरे में' अपनी समय सापेक्ष के लिए हमेशा प्रासंगिक बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. मुक्तिबोध, गजानन माधव, *चाँद का मुँह टेढ़ा है,* नयी दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,19768.
2. जैन, नेमिचन्द, *मुक्तिबोध रचनावली-2,* दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1980.
3. गुप्त, आलोक, *मुक्तिबोध युग चेतना और अभिव्यक्ति,* गिरनार प्रकाशन, 1985.
4. मुक्तिबोध, गजानन माधव, *नयी कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य* , दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1971.
5. नवल, नन्दकिशोर .*निराला और मुक्तिबोध चार लम्बी कविताएँ,* दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 1992.
6. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी, *अपरा,* नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2009.
7. Hindimedia in >news>Half- acentury in…
   जैन, चन्द्रकुमार, भुले बिसरे लोग, अगस्त. 10.2015.
8. जैन, नेमीचन्द , मुक्तिबोध रचनावली-2, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1980.